आकार IAS

Shaping Your Dreams

इतिहास एवं संस्कृति

मुख्य परीक्षा

आधुनिक भारत का इतिहास

प्रश्नपत्र-01 | भाग-01 | इकाई-03

160/4, A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)

aakarias2014@gmail.com www.aakarias.com

9713300123, 6262856797, 6262856798

प्रश्न पत्र -01

आधुनिक भारत का इतिहास
MODERN INDIAN HISTORY

❒ भाग-1 : ब्रिटिश उपनिवेश के प्रति भारतीयों की प्रतिक्रिया

इकाई-3

- कृषक एवं आदिवासियों का विद्रोह, प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन/संग्राम।
- **भारतीय पुनर्जागरण :** राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन एवं इसके नेतृत्वकर्ता।
- गणतंत्र के रूप में भारत का उदय , राज्यों का पुनर्गठन, मध्य प्रदेश का गठन, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् की प्रमुख घटनाएँ।

❒ Part-1 : HISTORY AND CULTURE

UNIT-III

- Peasant and Tribal Revolts, The First Struggle of Independence.
- **Indian Renaissance :** The Freedom, National Movement and its Leaders (With Special Reference to MP)
- Emergence of India as a Republic, Reorganization of States, Formation of Madhya Pradesh. Major events of the post independence period

परीक्षा योजना

सामान्य अध्ययन के प्रथम प्रश्न-पत्र के भाग-I की इकाई-III का **पूर्णांक** 30 है

इकाई	प्रश्न	संख्या	x	अंक	=	कुल अंक	आदर्श शब्द सीमा
इकाई-2	अति लघु उत्तरीय	03	x	03	=	09	10 शब्द या 01 पंक्ति
	लघु उत्तरीय	02	x	05	=	10	50 शब्द या 05 से 06 पंक्तियां
	दीर्घ उत्तरीय	01	x	11	=	11	200 शब्द

विषय सूची (CONTENTS)

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
01	18वीं सदी के मध्य के भारत की राजनीतिक स्थिति	01
02	यूरोपीय कम्पनियों का भारत आगमन	02 - 04
03	कर्नाटक में अंग्रेज-फ्रांसीसी प्रतिस्पर्धा	05 - 09
04	अंग्रेजों की बंगाल विजय	10 - 15
05	मैसूर राज्य	16 - 19
06	मराठा राज्य, मराठा प्रशासन एवं आंग्ल-मराठा युद्ध	20 - 40
07	सिख इतिहास	41 - 47
08	ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था एवं समाज पर प्रभाव :	48 - 49
09	भू-राजस्व व्यवस्था	50 - 54
10	कृषि का व्यवसायीकरण	55 - 56
11	वि-औद्योगीकरण या हस्तशिल्प उद्योग का पतन	57
12	भारत में रेलवे का विकास	58 - 59
13	धन का निष्कासन	60 - 63
14	ब्रिटिश शासन के प्रति भारतीयों की प्रतिक्रिया :	64
15	कृषक विद्रोह	64 - 69
16	जनजातीय विद्रोह	70 - 72
17	नागरिक विद्रोह	73 - 76
18	1857 ई. का विद्रोह	77 - 86
19	सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन	87 - 94
20	भारतीय राष्ट्रवाद	95 - 96
21	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	97 - 98
22	उदारवादी चरण : 1885 ई. -1905 ई.	99 - 100
23	उग्रवादी चरण (1905 ई. -1917 ई.)	101 - 103
24	बंगाल विभाजन एवं स्वदेशी आन्दोलन	104 - 107
25	मुस्लिम लीग : दिसम्बर, 1906 ई.	108
26	क्रांतिकारी आन्दोलन का प्रथम चरण	109 - 111
27	होमरूल आन्दोलन	112 - 113
28	लखनऊ अधिवेशन	114 - 115
29	गांधीवादी आन्दोलन : 1917 ई. - 1947 ई.	116
30	गांधीजी का उदय	116 - 118

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
31	अफ्रीका में गांधीजी के सत्याग्रह के अनुप्रयोग	119 – 120
32	खिलाफत आन्दोलन	121 – 122
33	असहयोग आन्दोलन	123 – 124
34	स्वराज पार्टी	125 – 126
35	क्रांतिकारी आन्दोलन का द्वितीय चरण	127 – 129
36	साइमन कमीशन	130 – 131
37	नेहरू रिपोर्ट (1928 ई.)	132 – 133
38	सविनय अवज्ञा आन्दोलन	134 – 137
39	कांग्रेस का कराची अधिवेशन, 1931	138
40	गोलमेज सम्मेलन	139 – 140
41	साम्प्रदायिक पंचाट और पूना समझौता	141
42	1937 के प्रान्तीय चुनाव और कांग्रेस का शासन	142 – 143
43	द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान के घटनाक्रम	144 – 146
44	भारत छोड़ो आन्दोलन (अगस्त क्रांति)	147 – 149
45	आजाद हिन्द फौज	150
46	कैबिनेट मिशन से पूर्व की घटनाएं	151 – 152
47	कैबिनेट मिशन योजना	153
48	माउंटबेटन योजना	154
49	भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947	155
50	भारत विभाजन	156
51	ब्रिटिश शासन का भारत की स्वतंत्रता का निर्णय	157 – 159
52	गर्वनर जनरल	160 – 170
53	आधुनिक भारत में शिक्षा का विकास	171
54	भारतीय समाचार पत्रों का इतिहास	172
55	व्यक्तित्व	173 – 177
56	राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की सहभागिता	178
57	कम्पनी का संवैधानिक विकास	179 – 182
58	गणतंत्र के रूप में भारत का उदय	183 – 184
59	राज्यों का पुनर्गठन	185
60	मध्य प्रदेश का गठन	186 – 187
61	स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् में प्रमुख घटनाक्रम	188 – 199

160/4 - A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)
e-mail : aakarias2014@gmail.com ; Website : www.aakarias.com
CONTACT : 9713300123, 6262856797, 6262856798

18वीं सदी के मध्य के भारत की राजनीतिक स्थिति

❒ प्रस्तावना

आधुनिक भारत के इतिहास (1747–1947 ई.) को सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक संक्रमण, राजनीतिक परिवर्तनों और संघर्षों का दौर कहा जा सकता है। इस काल में होने वाले विभिन्न परिवर्तन किसी एक निश्चित घटनाक्रम का परिणाम नहीं थे, अपितु यह सब एक दीर्घकालीक घटित होने वाली घटनाओं का परिणाम थे। इस अवधि में हुए परिवर्तन भारतीय समाज के स्थानीय राजनीति तथा साम्राज्यवादी शक्ति के दबाव एवं निहित स्वार्थों का परिणाम थे, जिसका आरम्भ मुगल साम्राज्य के पतन के साथ हुआ।

मुगल साम्राज्य का पतन 18वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध की युगान्तरकारी घटना थी। महान मुगल साम्राज्य अपने समकालीन साम्राज्यों के लिए ईर्ष्या का विषय था, लेकिन 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर होने लगा। मुगल बादशाहों ने अब अपनी सत्ता और प्रतिष्ठा खो दी और उनका साम्राज्य दिल्ली के आस–पास ही कुछ वर्ग मील तक सीमित होकर रह गया। वस्तुत: 18वीं सदी में भारत राजनीतिक रूप से विभाजित हो गया था। मुगल साम्राज्य के खण्डों से भारत में विभिन्न स्वतंत्र अथवा अर्द्ध–स्वतंत्र राज्यों का निर्माण हुआ। क्षेत्रीय शक्तियों के उदय ने भारतीय राजनीतिक मानचित्र को ही बदल दिया था। तब से भारतीय राजनीतिक इतिहास में एक नए युग का प्रारंभ होता है।

इसी क्रम में यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों का भारत आगमन हुआ। प्रारंभ से ही विभिन्न यूरोपीय कम्पनियों ने प्रतिस्पर्धी शक्तियों के रूप में कार्य किया। प्रतिस्पर्धा की अंतिम निर्णायक लड़ाई में अंग्रेजों ने अन्य विदेशी शक्तियों, जैसे – फ्रांसीसी, डच आदि को पराजित किया।

ब्रिटिश ईस्ट कम्पनी ने भारत में स्वयं को व्यापारिक कम्पनी के रूप में स्थापित स्थापित किया, जिसका प्रारंभिक उद्देश्य कम्पनी को एशियाई केन्द्र में लाभप्रद कम्पनी के रूप में स्थापित करना था। इसी क्रम में कम्पनी ने भारतीय राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप किया। प्लासी और बक्सर के युद्ध के पश्चात् कम्पनी ने व्यापारिक लाभ के लिए भारत में अपने शासन को प्रारंभ किया।

18वीं शताब्दी के अन्त तक अंग्रेजों ने बंगाल, मैसूर, अवध पर भी अधिकार स्थापित कर लिया था। 19वीं सदी के प्रारंभ मे सहायक संधि के द्वारा और अंत में साम्राज्यवादी नीति के तहत् शक्ति के बल पर मराठा और पंजाब पर भी अधिकार स्थापित कर लिया था।

जॉन सीले जैसे इतिहासकार मानते हैं कि ब्रिटिश की भारत विजय गैर–इरादतन एवं संयोगवश थी। इनके अनुसार ब्रिटिश भारत में केवल व्यापार करने आए थे और उनका इस क्षेत्र पर शासन स्थापित किरने का कोई इरादा नहीं था। लेकिन वे न चाहते हुए भी भारतीयों द्वारा स्वयं उत्पन्न किए गए राजनीतिक संकट में फंस गए और फिर वे यहां के क्षेत्रों पर कब्जा करने के लिए बाध्य हुए।

अन्य इतिहासकार मानते हैं कि अंग्रेज भारत में एक व्यापक एवं शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना के लिए आए थे। उन्होंने इसके लिए एक व्यापक रणनीति एवं सुनियोजित योजना बनाई एवं इस पर काम कर उन्होंने भारतीय क्षेत्रों को अपने अधिकार में ले लिया।

वस्तुत: प्रारंभ में अंग्रेजों ने गैर–इरादतन रूप से भारतीय क्षेत्रों को हासिल किया, लेकिन बाद में भारत भेजे गए अंग्रेज राजनीतिज्ञों एवं प्रशासकों में भारतीय क्षेत्रों पर कब्जा करने और साम्राज्य स्थापित करने के लिए नीतियां बनाई थीं। ज्यूडिथ ब्राउन के अनुसार अंग्रेजों ने अविलंब लाभ प्राप्त करने, प्रशासकों की व्यक्तिगत लालसाएं एवं महत्वाकांक्षाएं पूरी करना आदि के साथ–साथ यूरोप में हुए राजनीतिक घटनाक्रमों के प्रभाव कुछ ऐसे कारक थे, जिन्होंने भारत में अंग्रेजों को उनका राजनीतिक क्षेत्र बढ़ाने के लिए प्रवृत्त किया।

इस प्रकार 18वीं शताब्दी में पश्चिम यूरोपीय देशों ने अपने व्यापारिक एवं राजनीतिक हितों को सुनिश्चित करने के लिए वैश्विक क्षेत्रीय विस्तार का चरण प्रारंभ किया था तथा उपनिवेशों की स्थापना की। अंग्रेजों की भारत विजय को इस वैश्विक राजनीतिक घटना क्रम के एक हिस्से के तौर पर देखा जा सकता है।

यूरोपीय कम्पनियों का भारत आगमन

1453 ई. में कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों का अधिकार हो गया, जिससे यूरोप व एशिया के मध्य के पुराने व्यापारिक मार्ग तुर्कों के नियंत्रण में आ गए। यूरोप के अधिकांश देश भारत तथा दक्षिणी-पूर्वी एशियाई देशों के साथ मुख्यत: मसालों का व्यापार करना चाहते थें। अत: यूरोपीय देशों द्वारा नवीन व्यापारिक मार्गों की खोज को प्रोत्साहन दिया गया। नवीन देशों एवं व्यापारिक मार्गों की खोज में पुर्तगाल और स्पेन अग्रणी थे।

❒ पुर्तगालियों का भारत आगमन

पुर्तगाल के नाविक बार्थोलोमोडियाज ने 1487 ई. में **उत्तमाशा अन्तरीप** (कैप ऑफ गुड्स) की खोज की। स्पेन निवासी **क्रिस्टोफर कोलम्बस** ने 1492 ई. में भारत पहुंचने का मार्ग ढुंढ़ते हुए अमेरिका की खोज की। भारत में यूरोपियों के आने के क्रम में सर्वप्रथम पुर्तगीज थे। इसके बाद डच, अंग्रेज, डेनिश और फ्रांसीसी आए। इन यूरोपियों में यद्यपि अंग्रेज डच के बाद आए थे, लेकिन इनकी ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना डच ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना से पहले ही हो चुकी थी।

❖ वास्कोडिगामा

प्रथम यूरोपीय एवं पुर्तगाली यात्री वास्कोडिगामा पुर्तगाली शासक डॉन हेनरिक के प्रतिनिधि के रूप में 90 दिन की समुद्री यात्रा के बाद **अब्दुल मुनीक** नामक गुजराती पथ-प्रदर्शक की सहायता से 1498 ई. को **कालीकट (केरल)** के समुद्र तट पर उतरा। कालीकट के शासक जमोरिन ने वास्कोडिगामा का स्वागत किया।

❖ फ्रांसिस्को-डी-अल्मेडा (1505-1509 ई.)

यह प्रथम पुर्तगाली गवर्नर था। इसका मुख्य उद्देश्य दक्षिण-पूर्व एशिया के व्यापार पर एकाधिकार स्थापित करना था। इसके लिए इसने शान्त **जल की नीति** (ब्लू वॉटर पॉलिसी) अपनाई। 1509 ई. में इस नीति के तहत् अल्मेडा ने गुजरात, तुर्की और मिस्त्र की संयुक्त नौसेना को पराजित किया। इस समय पुर्तगाली नौसेना हिन्द महासागर की सबसे शक्तिशाली नौसेना थी।

❖ अल्फांसो डी अल्बुकर्क (1509-1515 ई.)

अल्फांसो डी अल्बुकर्क को भारत में **पुर्तगाली साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक** माना जाता है। अल्बुकर्क ने 1510 ई. में बीजापुर के शासक यूसुफ आदिलशाह से गोवा को विजित किया। अल्बुकर्क ने मलक्का और फारस की खाड़ी में स्थित होर्मुज बंदरगाह पर अधिकार किया। इसने पुर्तगालियों से भारतीय महिलाओं के विवाह को प्रोत्साहन दिया। इसने पुर्तगाली क्षेत्र में सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाया।

❖ कार्ट्ज-आर्मेडा काफिला व्यवस्था

पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर में होने वाले व्यापार पर अधिकार स्थापित करने के लिए इस व्यवस्था को प्रारंभ किया। कार्ट्ज का तात्पर्य परमिट से था। आर्मेडा के माध्यम से भारतीय व अन्य यूरोपीयों के लिए परमिट को अनिवार्य किया गया था। काफिला व्यवस्था के तहत् स्थानीय व्यापारिक जहाजों को पुर्तगालियों के द्वारा सुरक्षा उपलब्ध कराई जाती थी।

❖ पुर्तगाली साम्राज्य के पतन का कारण

17वीं शताब्दी के प्रथम दशक में यूरोपीय शक्तियों के सत्ता के संघर्ष में पूरब से स्थापित पुर्तगाली साम्राज्य लगभग समाप्त हो गया। इसका स्थान डचों और अंग्रेजों ने ले लिया। पुर्तगाली साम्राज्य के पतन के निम्नलिखित कारण थे -

1) पुर्तगाल में सम्राट निरंकुश शासन था। समाज में कुलीन वर्ग का प्रभुत्व था और व्यापारियों का इतना सामाजिक प्रभाव नहीं था कि वे राज्य को अपने हितों की पूर्ति के लिए प्रभावित कर सकें।

2) 1580 ई. में पुर्तगाल स्पेन के राजा के साथ जुड़ गया और स्पेन के पतन के साथ-साथ इसका भी पतन हो गया। 1588 ई. के नौ-सेना युद्ध में अंग्रेजों ने स्पेन को करारी शिकस्त दी, जिसके बाद स्पेन की नौसेनिक शक्ति क्षीण हो गई। परिणामस्वरूप भारत में पुर्तगाली प्रभाव भी समाप्त होने लगा।

3) पुर्तगालियों के द्वारा उपनिवेश के रूप में ब्राजील की खोज की गई। इसके पश्चात् पुर्तगालियों ने उपनिवेश के रूप में पश्चिमी क्षेत्रों में ही रूचि ली।

4) धर्म के मामले में पुर्तगाली असहिष्णु एवं धर्मांध थे और कई स्थानों पर उन्होंने भारतीयों का बलात धर्म परिवर्तन किया, जिस कारण भारतीय शासक वर्ग ओर जनता में पुर्तगालियों के प्रति असंतोष व्याप्त था।

5) पुर्तगालियों ने भारत में व्यापारिक प्रभुत्व के लिए लूटपाट की नीति को अपनाया। इस कारण क्षेत्रीय भारतीय शासकों ने पुर्तगालियों का विरोध किया।

6) पुर्तगाली आर्थिक और राजनीतिक रूप से इंग्लैण्ड जैसी दूसरी पश्चिमी शक्तियों से प्रतिस्पर्धा करने में अक्षम थे। अंग्रेजों की नौ-सेनिक शक्ति पुर्तगालियों से श्रेष्ठ थी। 1611 ई. के स्वाल्ली के युद्ध में ब्रिटिश सेना ने पुर्तगालियों को पराजित किया।

❐ डचों का भारत आगमन

डच हॉलेण्ड या नीदरलैण्ड के निवासी थे। 1602 ई. में डचों द्वारा संयुक्त पूंजी कम्पनी के रूप में डच ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना की गई। 1605 ई. में **वादेरहेग** के द्वारा मसूलीपट्टनम में प्रथम डच फैक्ट्री की स्थापना की गई।

डचों के आगमन के समय पुर्तगालियों का पूर्वी व्यापार पर एकाधिकार था। अत: पुर्तगाली एवं डचों के मध्य संघर्ष अपरिहार्य था। इस संघर्ष में डचों ने पुर्तगालियों को पराजित कर पुलीकट, कोच्चि एवं बालासोर पर अधिकार किया। डचों ने बंगाल में चिनसुरा, कासिम बाजार और पटना में फैक्ट्री की स्थापना की थी।

❖ बेदरा का युद्ध

प्लासी के युद्ध के पश्चात् ब्रिटिश हस्तक्षेप के कारण मीर जाफर ने डचों के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध षड्यंत्र किया। अत: क्लाइव के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना ने **नवम्बर, 1759 ई.** में **बेदरा (बंगाल) के युद्ध** में डचों को पराजित किया। इस प्रकार अंग्रेजों के लिए एक महत्वपूर्ण यूरोपीय चुनौती भारत से समाप्त हो गई।

❐ अंग्रेजों का भारत आगमन

❖ ईस्ट इंडिया कम्पनी

31 दिसम्बर, 1600 ई. को इंग्लैण्ड की **रानी एलिजाबेथ प्रथम** की अनुमति से 15 वर्षों के लिए पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने के लिए ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना हुई। कम्पनी के संचालन हेतु 26 सदस्यीय निदेशक मण्डल का गठन किया गया। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने प्रारंभिक वर्षों में व्यापारिक कम्पनी के रूप में स्वयं को स्थापित कर भारत में अपने प्रभुत्व को स्थापित किया।

❖ कैप्टन हॉकिन्स

1608 ई. में ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रतिनिधि के रूप में जेम्स प्रथम के पत्र के साथ कैप्टन हॉकिन्स मुगल शासक जहाँगीर के दरबार में उपस्थित हुआ। हॉकिन्स 'फारसी भाषा' का ज्ञाता था। हॉकिन्स के व्यवहार से प्रसन्न होकर जहाँगीर ने उसे **400 का मनसब**, **एक जागीर** एवं **खान की उपाधि** प्रदान की। जहाँगीर ने कम्पनी को **सूरत** में व्यापार करने की अनुमति प्रदान की, किन्तु पुर्तगाली और भारतीय व्यापारियों द्वारा विरोध करने पर इस अनुमति को वापस ले लिया गया।

❖ सर टॉमस रो

सर टॉमस रो ब्रिटेन के राजा जेम्स प्रथम के दूत के रूप में सितम्बर, 1615 ई. को सूरत पहुंचा तथा अजमेर में जहाँगीर के दरबार में उपस्थित हुआ। इस बीच सर टॉमस रो ने मुगल साम्राज्य में विभिन्न हिस्सों में व्यापार करने तथा दुर्गीकरण की अनुमति प्राप्त की। इस दौरान सभी व्यापारिक कोठियों का नियंत्रण सूरत से होता था।

❖ सुनहरा फरमान

1632 ई. में **गोलकुण्डा** के शासक द्वारा अंग्रेजों को 500 पैगोडा वार्षिक के बदले गोलकुण्डा के बंदरगाहों से व्यापार की अनुमति प्रदान की, जिसे सुनहरा फरमान कहा जाता है।

❖ गैरोल्ड आंगियर

1662 ई. में ही चार्ल्स द्वितीय को पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह करने के उपलक्ष्य में दहेज के रूप में बम्बई का बंदरगाह प्राप्त हुआ था, जिसे उसने 1668 ई. में 10 पौण्ड वार्षिक किराये पर ईस्ट इंडिया कम्पनी को दे दिया। 1669 ई. और 1677 ई. के मध्य कम्पनी के गवर्नर गैरोल्ड आंगियर ने आधुनिक बम्बई नगर की नींव डाली। इसे बम्बई के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। 1687 ई. में ईस्ट इंडिया कम्पनी का मुख्यालय सूरत से बम्बई लाया गया।

❖ जॉब चारनॉक

ब्रिटिश अधिकारी जॉब चारनॉक के द्वारा 1698 ई. में **कालीकाता**, **सूतीनाता** एवं **गोविन्दपुर** की जागीरों को मिलाकर आधुनिक कलकत्ता की स्थापना की गई। 1700 ई. में यहां चरनॉक के द्वारा कलकत्ता में **फोर्ट विलियम किले** की स्थापना की गई। इसका पहला गवर्नर सर चार्ल्स आयर हुआ।

❖ शाही फरमान

1717 ई. में मुगल शासक **फर्रूखसियर** के द्वारा शाही फरमान जारी किया गया। इसके तहत् 3000 रुपए वार्षिक कर के बदले बंगाल में तथा 10,000 रुपए वार्षिक कर के बदले सूरत में सभी करों से मुक्ति व बम्बई में कम्पनी द्वारा ढाले गए सिक्कों को सम्पूर्ण मुगल राज्य में चलाने का अधिकार मिल गया। ब्रिटिश इतिहासकार ओर्म्स ने इसे कम्पनी का मैग्नाकार्टा कहा है।

कर्नाटक में अंग्रेज-फ्रांसीसी प्रतिस्पर्धा

यूरोपीय कम्पनियों के भारत आगमन का प्रमुख उद्देश्य व्यापार था, जो व्यापार से प्रारंभ होकर ओपनिवेशिक आर्थिक साम्राज्यवाद में बदल गया। इन्हीं परिस्थितियों में 18वीं शताब्दी के मध्य में कर्नाटक युद्ध हुआ। इस युद्ध ने यह निर्णय कर दिया कि अंग्रेज ही भारत के स्वामी होंगे, फ्रांसीसी नहीं। इन कारणों से कर्नाटक युद्धों का भारतीय इतिहास में महत्व है।

❑ प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-1748 ई.)

यह युद्ध आस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध (1740 ई.) का विस्तार था। कमोडोर कर्टिस बारनैत के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने फ्रांसीसी जहाजों पर अधिकार लिया। इस घटना के पश्चात् फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले ने मॉरिशस के गवर्नर ला बूर्डोने की सहायता से अंग्रेजों को पराजित कर मद्रास पर अधिकार कर लिया। इस समय कर्नाटक का नवाब अनवरूद्धीन था, जिसने इस युद्ध का विरोध किया।

कर्नाटक का प्रथम युद्ध **सेंट टॉम (1748 ई.) के युद्ध** के लिए जाना जाता है। यह युद्ध फ्रांसीसी सेना तथा कर्नाटक के नवाब अनवरूद्दीन के नेतृत्व में भारतीय सेना के बीच लड़ा गया। कैप्टन पैराडाइस के अधीन एक छोटी सी फ्रांसीसी सेना ने जिसमें 230 फ्रांसीसी तथा 700 भारतीय सैनिक थे, महफूज खाँ के नेतृत्व में 10,000 भारतीय सेना को अडयार नदी पर स्थित सेंट टॉम के स्थान पर पराजित कर दिया। अन्ततः **एक्स ला शापेल की संधि (1748 ई.)** से यह युद्ध समाप्त हो गया।

इस संधि के तहत् फ्रांसीसीयों ने अंग्रेजों को मद्रास तथा अंग्रेजों ने फ्रांसीसीयों को अमेरिका स्थित लुई बर्ग नामक स्थान प्रदान किया। इस युद्ध में हुए सैनिक अभियानों के कारण अंग्रेजों और फ्रांसीसियों को समुद्र तट के भीतर भारतीय भौगोलिक क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त हुआ। व्यापारिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिए जल सेना और समुद्री शक्ति का विशेष महत्व है।

इस युद्ध से यह स्पष्ट हो गया कि यूरोपीय प्रणाली से प्रशिक्षित और कम संख्या की सेना के द्वारा भारतीय शासकों की बड़ी सेना को पराजित किया जा सकता है। इन परिस्थितियों का लाभ यूरोपीयों के द्वारा उठाया गया ओर भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप कर अपने प्रभुत्व को स्थापित करने के प्रयास किए गए।

❑ द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-1754 ई.)

द्वितीय कर्नाटक युद्ध अंग्रेजों एवं फ्रांसीसियों के मध्य हैदराबाद तथा कर्नाटक में नवाबी के पद को लेकर संघर्ष का परिणाम था। हैदराबाद के निजाम आसफजाह की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र नासिरजंग और पौत्र मुजफ्फरजंग के मध्य उत्तराधिकार युद्ध प्रारंभ हो गया था। इसी दौरान कर्नाटक में अनवरूद्दीन की गद्दी का विरोध उसके बहनोई चांदा साहब के द्वारा किया गया।

उत्तराधिकार के इस संघर्ष में डूप्ले ने मुजफ्फरजंग एवं चांदा साहब का, जबकि दूसरी ओर अंग्रेजों ने अनवरूद्दीन एवं नासिरजंग को अपना समर्थन प्रदान किया। चांदा साहब ने **1749 ई.** में **अम्बूर के युद्ध** में अनवरूद्दीन को पराजित कर हत्या की तथा कर्नाटक के अधिकांश हिस्सों पर अधिकार कर लिया। 1750 ई. में नासिरजंग की मृत्यु के पश्चात् मुजफ्फरजंग दक्कन का सूबेदार बन गया। फ्रांसीसी सैनिक अधिकारी ???? को हैदराबाद में नियुक्त किया।

इस समय दक्षिण भारत में फ्रांसीसियों का प्रभाव चरम पर था। इसी दौरान इंग्लैण्ड से मद्रास एक लिपिक के रूप में आया राबर्ट क्लाइव ने चांदा साहब की राजधानी अराकाट का घेरा डालकर उस पर कब्जा कर लिया। शीघ्र ही फ्रांसीसी सेना को आत्मसमर्पण हेतु विवश होना पड़ा और चांदा साहब की हत्या कर दी गई।

ब्रिटिश समर्थक अनवरूद्दीन का पुत्र मुहम्मद अली कर्नाटक का नवाब बना। फ्रांस स्थित अधिकारियों ने भारत में डूप्ले की नीति की आलोचना करते हुए उसे वापस इंग्लैण्ड बुला लिया तथा उसके स्थान पर गोदहे को 1754 ई. को गवर्नर बनाया गया। 1755 ई. में पाण्डिचेरी की संधि से युद्ध समाप्त हुआ। संधि के तहत् दोनों देशों ने भारतीयों के आपसी मामलों में हस्तक्षेप न करने का निर्णय लिया।

इस प्रकार कर्नाटक का द्वितीय युद्ध अनिश्चित रहा। जहां कर्नाटक में ब्रिटिश समर्थक नवाब गद्दी पर बैठा वहीं हैदराबाद में फ्रांसीसी अधिकारी बुस्सी के अधीन मुजफ्फरजंग के पश्चात् सलावतजंग ने गद्दी प्राप्त की। सलावतजंग ने उत्तरी सरकार क्षेत्र के 04 जिले मुस्तफा नगर, एल्लौर, राजमुंदरी एवं चीकाकोल फ्रांसीसियों का प्रदान किए।

❐ कर्नाटक का तृतीय युद्ध (1758-1763 ई.)

1756 ई. में इंग्लैण्ड और फ्रांस के मध्य सप्तवर्षीय युद्ध (1756-1763 ई.) प्रारंभ हो गया। फ्रांसीसी सरकार ने भारत में फ्रांसीसी शक्ति एवं प्रतिष्ठा को स्थापित करने के लिए **काउंट-द-लाली** के नेतृत्व में एक शक्तिशाली सेना भेजी। आरंभ में लाली को सफलता प्राप्त हुई उसने अंग्रेजों के सेंट फोर्ट डेविड के दुर्ग पर अधिकार कर लिया, किन्तु यह सफलता अधिक समय तक नहीं रह सकी।

1757 ई. में अंग्रेजों ने चन्द्रनगर पर अधिकार कर लिया। लाली जो इस समय फ्रांसीसी गवर्नर था, ने तंजौर पर आक्रमण किया, परन्तु असफल रहा। इस दौरान लाली ने बुस्सी को हैदराबाद से बुलाया। यह इसकी सबसे बड़ी भूल थी, क्योंकि इससे वहां फ्रांसीसियों की स्थिति कमजोर हो गई। अन्ततः 22 जनवरी, 1760 ई. में आयरकूट के अधीन अंग्रेजी सेना ने वांडिवाश के युद्ध में फ्रांसीसियों को बुरी तरह परास्त किया। इतिहास में वांडीवाश का युद्ध निर्णायक सिद्ध हुआ। इस युद्ध में फ्रांसीसियों का वह विशाल भवन धराशायी हो गया, जिसे मार्टिन, ड्यूमा और डूप्ले ने अथक परिश्रम से निर्मित किया था। **1763 ई.** की **पेरिस की संधि** से यह युद्ध समाप्त हो गया।

❖ पेरिस की संधि 1763 ई.

इस संधि से सप्तवर्षीय युद्ध समाप्त हो गया। अमेरिका और भारत पर अंग्रेजों का अधिकार स्थापित हुआ। भारत में फ्रांसीसी शक्ति समाप्त हो गई। अंग्रेजों ने **त्रिचनापल्ली**, **मसूलीपट्‌टनम** और **जिन्जी** पर अधिकार कर लिया। फ्रांसीसियों को पाण्डिचेरी, माही और चंद्र नगर का क्षेत्र वापस कर दिया गया, किन्तु वे इन क्षेत्रों में किलेबंदी नहीं कर सकते थे। फ्रांसीसियों की सैनिक संख्या सीमित कर दी गई। कर्नाटक में मोहम्मद अली तथा हैदराबाद में सलावतजंग को निजाम स्वीकार किया गया।

❐ भारत में डूप्ले का मूल्यांकन

जोसेफ फ्रांसिस डूप्ले का जन्म 1697 ई. में हुआ था। डूप्ले को 1720 ई. में फ्रांसीसी कम्पनी में पांडिचेरी में एक उच्च पद प्राप्त हुआ। 1730 ई. में डूप्ले को चंद्रनगर का गवर्नर नियुक्त किया गया। कार्यकुशलता तथा कुशल कूटनीति के कारण फ्रांसीसी सरकार ने 1741 ई. में डूप्ले को भारत में फ्रांसीसी कम्पनी के महानिदेशक के पद पर नियुक्त किया। मुगल बादशाह मोहम्मदशाह के द्वारा डूप्ले को नवाब की उपाधि प्रदान की गई। इसी क्रम में डूप्ले ने पांडिचेरी को केन्द्र बनाकर भारत में कम्पनी के साम्राज्य की स्थापना का प्रयास किया।

प्रथम और द्वितीय कर्नाटक युद्ध में डूप्ले की कुशल कूटनीति ने भारत में फ्रांसीसी विजय का मार्ग प्रशस्त किया। डूप्ले प्रथम यूरोपीय था, जिसने भारतीय शासकों की आंतरिक राजनीति में हस्तक्षेप किया। उसने द्वितीय कर्नाटक युद्ध के दौरान हैदराबाद के लिए मुजफ्फरजंग और कर्नाटक के लिए चंदा साहब का समर्थन किया। इसके बदले में डूप्ले को दक्कन के क्षेत्रों में व्यापारिक अधिकार प्राप्त हुए। प्रथम युद्ध में डूप्ले ने कर्नाटक के नवाब अनवरूद्दीन को पराजित कर मद्रास पर अधिकार किया।

डूप्ले ने कम्पनी के आर्थिक संकट के समाधान के लिए खर्चों में कटौती की, अधिकारियों के वेतन कटौती के साथ-साथ सार्वजनिक व्यय में कमी की। आर्थिक संकट के बावजूद डूप्ले ने कम्पनी की सुरक्षा के लिए रक्षाव्यय में वृद्धि की तथा इसके लिए अपनी व्यक्तिगत राशि भी व्यय की।

उपरोक्त योग्यताओं के बावजूद डूप्ले अदूरदर्शी एवं असफल सेनानायक साबित हुआ। डूप्ले ने कम्पनी के आर्थिक और व्यापारिक अधिकारों को सुरक्षित रखने के गंभीर प्रयास नहीं किए। डूप्ले इस बात का मूल्यांकन करने में असफल रहा कि यूरोप और भारत की राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति अलग है। डूप्ले ने युद्धक्षेत्र में कुशल सैन्य संचालन के स्थान पर कूटनीति को अधिक महत्व दिया, जो अधिक समय तक स्थायी नहीं रह सकी। पांडिचेरी को केन्द्र बनाकर भारत में शासन करना डूप्ले के लिए स्वप्नमात्र साबित हुआ।

❑ फ्रांसीसियों की असफलता के कारण/अंग्रेजों की सफलता के कारण

फ्रांसीसियों ने एक समय में अपनी राजनीतिक विजयों से भारतीय संसार को चकित कर दिया था, किन्तु अन्तत: डूप्ले की महान् योजनाओं, बुस्सी की कूटनीति, लाली के साहस तथा बहादुरी के बावजूद फ्रांसीसियों का भारत की राजनीतिक सत्ता पाने का सपना समाप्त हो गया। फ्रांसीसियों की असफलता के मुख्यरूप से निम्नलिखित कारण को उत्तरदायी थे –

❖ कम्पनियों की प्रकृति में भिन्नता

अंग्रेजी कम्पनी एक निजी व्यापारिक कम्पनी थी। इसके संचालन तथा पूंजी लगाने वाले सामान्य नागरिक थे, जिन्हें राज्य ने किसी निश्चित प्रश्रय का आश्वासन नहीं दिया था। उनका लक्ष्य लाभ प्राप्त करना था। अत: इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ थी और इसके संचालक इस बात के लिए प्रयत्नशील रहते थे कि उनका प्रत्येक व्यापारिक अभियान सफल हो। इसके विपरीत फ्रांसीसी कम्पनी राज्य से सहायता प्राप्त सरकारी कम्पनी थी। फ्रांस के राजा तथा मंत्रियों का धन उसमें लगा होने के कारण फ्रांसीसी कम्पनी पर फ्रांस की राजनीति का प्रभाव पड़ता था।

1725–1765 ई. तक कम्पनी की कोई भी बैठक नहीं हो सकी। इस कारण फ्रांसीसी कम्पनी अपना पूरा ध्यान व्यापार की ओर केन्द्रित नहीं कर पाती थी। परिणामस्वरूप भारत में उसकी आर्थिक स्थिति सर्वदा खराब रहती थी। ऐसी कम्पनी डूप्ले की महंगी महत्वाकांक्षाओं तथा युद्धों के व्ययों की पूर्ति नहीं कर सकती थी। फ्रांसीसी कम्पनी में जोखिम लेने की प्रवृत्ति नगण्य थी। इसे डूप्ले को वापस बुलाने के संदर्भ में समझा जा सकता है।

❖ फ्रांसीसियों का यूरोप में उलझना

18वीं सदी में फ्रांसीसी सम्राटों की यूरोपीय महत्वाकांक्षाओं के कारण साधनों पर अत्यधिक दबाव पड़ा। इस समय फ्रांस यूरोप में अपनी प्राकृतिक सीमाओं को प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा था। इसके लिए वह ईटली, बेल्जियम तथा जर्मनी की ओर बढ़ने की कोशिश में इन देशों के साथ युद्ध में उलझ गया। परिणामस्वरूप ये उपनिवेश तो हाथ से जाते रहे और यूरोप में भी नगण्य क्षेत्र ही उसे मिल सका।

इंग्लैण्ड अपने आप को यूरोप से पृथक मानता था तथा उसकी उस प्रदेश में प्रसार की कोई इच्छा नहीं थी। यूरोप में उसकी भूमिका केवल शक्ति संतुलन बनाए रखने की थी। उसने अपनी सारी शक्ति एकाग्रचित्तता से उपनिवेशों को प्राप्त करने में लगा दी। अन्तत: उसे सफलता मिली और उसने भारत तथा उत्तरी अमेरिका में फ्रांस को पराजित कर दिया।

❖ फ्रांसीसी सरकार की नीति

फ्रांस की सरकार स्वयं भारत में फ्रांसीसियों के पतन के लिए जिम्मेदार थी। इस समय फ्रांस में लुई XV का शासनकाल था। इसके काल में फ्रांसीसी अर्थव्यवस्था संकटग्रस्ट थी और इसे सुधारने के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया। दूसरी ओर ब्रिटेन में संसदीय राजतंत्र स्थापित था, जिसमें एक प्रभुत्व वर्ग शासन कर रहा था।

ईस्ट इंडिया कम्पनी एक गैर–सरकारी कम्पनी होते हुए भी उसे सरकार का पूर्ण सहयोग प्राप्त था तथा वह अपने अधिकारियों की हमेशा प्रशंसा करती थी। इसके कारण अंग्रेज अधिकारियों का मनोबल ऊँचा रहा और वे अपने सैनिकों में साहस तथा उत्साह की भावना भरने में सफल रहे।

❖ व्यापारिक केन्द्रों की भौगोलिक स्थिति

भौगोलिक दृष्टि से अंग्रेजी कम्पनी के व्यापारिक केन्द्र, फ्रांसीसी कम्पनी की अपेक्षा अधिक सामरिक महत्व के थे। पूर्वी समुद्र तट बंगाल, मद्रास तथा सेन्ट डेविड के बन्दरगाह पाण्डिचेरी की अपेक्षा कहीं अधिक उपयोगी थे। पाण्डिचेरी में जहाजों से समान उतारने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं था। पश्चिमी समुद्र तट पर बम्बई की तुलना में फ्रांस के पास कोई स्थान नहीं था।

यद्यपि पाण्डिचेरी अंग्रेजों के नियंत्रण से अपेक्षाकृत मुक्त था, किन्तु उसके निकट ही अंग्रेजों का सेन्ट डेविड का किला था। इस प्रकार दोनों कम्पनियों के व्यापारिक केन्द्रों को भौगोलिक स्थिति ने अंग्रेजों की स्थिति को सुदृढ़ता तथा सहयोग प्रदान किया। वांडिवाश की पराजय के बाद फ्रांसीसियों के एकमात्र महत्वपूर्ण बन्दरगाह पाण्डिचेरी का भी अन्त हो गया।

❖ बंगाल में अंग्रेजी सफलताओं का प्रभाव

अंग्रेजों की बंगाल विजय से न केवल प्रतिष्ठा बढ़ी, अपितु बंगाल का अपार धन तथा जन शक्ति उन्हें मिल गई। जिस समय काउन्ट-डी-लाली को अपनी सेना को वेतन देने की चिन्ता थी, बंगाल से अंग्रेजों को धन तथा जन दोनों प्राप्त हो रहा था।

मेरियट ने लिखा है "डूप्ले ने मद्रास में भारत की चाबी खोजने का निष्फल प्रयत्न किया। क्लाइव ने यह चाबी बंगाल में खोजी और प्राप्त कर ली।"

❖ नौ-सेनिक दुर्बलता

1743-63 ई. के मध्य इन दोनों कम्पनियों की भारत में स्थिति यूरोप से आने वाली नाविक शक्ति पर निर्भर करती थी। आस्ट्रिया के उत्तराधिकार युद्ध के अवसर पर ही ब्रिटेन ने फ्रांस की नौ-सेना पर श्रेष्ठता स्थापित कर ली थी। 1748-51 ई. तक भी जो सफलता डूप्ले को मिली, वह उस समय थी जब अंग्रेजी नौ-सेना ने युद्ध में भाग लेना आरंभ नहीं किया था। नौ-सेनिक शक्ति के कारण ही अंग्रेज यूरोप, बम्बई तथा बंगाल से लगातार कर्नाटक में सहायता पहुंचा सके और फ्रांसीसियों को सहायता पहुंचाने से रोकते रहे।

वी. ए. स्मिथ के अनुसार "पाण्डिचेरी को आधार बनाकर एक ऐसी शक्ति से युद्ध करने में जिसके पास बंगाल और समुद्र की सत्ता थी, सिकंदर महान ओर नेपोलियन भी भारत में साम्राज्य स्थापित करने में सफल नहीं हो सकते थे।"

❖ डूप्ले का उत्तरदायित्व

डूप्ले में नेतृत्व के श्रेष्ठ गुण होते हुए भी वह फ्रांसीसियों की हार के लिए उत्तरदायी था। सर्वप्रथम वह राजनीतिक षड्यंत्रों में इतना उलझ गया कि उसने इन झगड़ों के कुछ पक्षों की ओर ध्यान नही नहीं दिया। उसने कम्पनी के व्यापार तथा वित्तीय पक्ष की इतनी अवहेलना की कि फ्रांसीसियों का पहले से ही कम व्यापार और कम होना आरम्भ हो गया।

1751 ई. में मुजफ्फरजंग द्वारा डूप्ले को कृष्णा नदी के पार के मुगल क्षेत्रों का गवर्नर नियुक्त किए जाने को अंग्रेज आसानी से स्वीकार नहीं कर सकते थे। दूसरा वह यह नहीं समझ पाया कि भारत में दोनों कम्पनियों का झगड़ा वास्तव में यूरोप तथा अमेरिका में दोनों राष्ट्रों के झगड़े का ही एक अंग है।

❖ अंग्रेजों का योग्य नेतृत्व

अंग्रेज कम्पनी का राजनीतिक तथा सैनिक नेतृत्व फ्रांसीसी कम्पनी की अपेक्षा श्रेष्ठ था। क्लाइव, डुप्ले की अपेक्षा कुशल सैनिक तथा योग्य कूटनीतिज्ञ था। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी शासन की द्वितीय पंक्ति में आयरकूट, लारेंस, हेक्टर मुनरो जैसे योग्य सेनापति थे, जबकि फ्रांसीसी सैनिक उग्र तथा दम्भी स्वभाव के थे।

आंग्ल फ्रांसीसी संघर्ष के दौरान बड़े-बड़े फ्रांसीसी अधिकारी कभी एकमत नहीं रहे और छोटे अधिकारी योग्य साबित नहीं हुए। मद्रास को लेकर लाबूरदोने तथा डूप्ले का झगड़ा हुआ, वह वापस मॉरीशस चला गया। डूप्ले तथा बुस्सी अच्छे मित्र होते हुय भी नीतिपरक मतभेद रखने थे और काउन्ट डी लाली ने अपने व्यवहार से सभी को असंतुष्ट कर दिया था। यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत, एंग्लो-फ्रेंच औपनिवेशिक झगड़े के भिन्न युद्ध स्थलों में से एक था तथा उसमें अंग्रेज निश्चय ही अधिक भाग्यशाली एवं सफल सिद्ध हुए।

अभ्यास प्रश्न

अति लघु उत्तरीय (03 अंक)

1. वास्कोडिगामा
2. फ्रांसिस्को-डी-अल्मेडा
3. कार्ट्ज-आर्मेडा काफिला व्यवस्था
4. बेदरा का युद्ध
5. ईस्ट इंडिया कम्पनी
6. कैप्टन हॉकिन्स
7. सर टॉमस रो
8. सुनहरा फरमान
9. गैरोल्ड आंगियर
10. जॉब चारनॉक
11. शाही फरमान
12. सेंट टॉम का युद्ध
13. एक्स ला शापेल की संधि
14. अम्बूर का युद्ध
15. पाण्डिचेरी की संधि
16. वाण्डिवाश का युद्ध
17. पेरिस की संधि

लघु उत्तरीय एवं दीर्घ उत्तरीय (05 अंक एवं 11 अंक)

1. पुर्तगालियों के पराजय के कारण।
2. कर्नाटक युद्ध का वर्णन कीजिए।
3. यूरोपिय कम्पनियों में अंग्रेजों के विजय के कारणों का उल्लेख कीजिए।
4. भारत में फ्रांसीसियों की असफलताओं के कारणों का वर्णन कीजिए।
5. भारत में फ्रांसीसी शक्ति के उद्भव एवं पतन डुप्ले की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।

मुगलकाल के अधीन बंगाल एक प्रान्त था, जिसमें बंगाल, बिहार, उड़ीसा के क्षेत्रों में बंगाल के नवाब का शासन था। यह भारत का सर्वाधिक सम्पन्न राज्य था। मुगल शासन के प्रति औपचारिक निष्ठा तथा व्यवहार में स्वतंत्रता ने बंगाल में नवाब के शासन को सुदृढ़ किया।

1717 ई. में औरंगजेब द्वारा **मुर्शीदकुली खाँ** को बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया गया। अपनी शासन व्यवस्था के अन्तर्गत मुर्शिदकुली खाँ ने नए भू-राजस्व प्रणाली के जरिए खालसा भूमि में वृद्धि की। उसने बंगाल में अजारा व्यवस्था को प्रारंभ किया। मुर्शिदकुली खाँ को दिक्षण का टोडरमल के नाम से जाना जाता है। उसने कलकत्ता के निकट मुर्शिदाबाद को अपनी राजधानी बनाया।

1727 ई. में मुर्शिदकुली खाँ की मृत्यु के पश्चात् उसका दामाद **शुजाउद्दीन** बंगाल का नवाब बना। शुजाउद्दीन ने 1773 ई. में बिहार भी बंगाल के अधीन कर दिया गया। शुजाउद्दीन की मृत्यु के पश्चात् **सरफराज खाँ** बंगाल का नवाब बना। यह एक अयोग्य तथा विलासी नवाब था, जिसके काल में अलीवर्दी खाँ ने विद्रोह किया।

मार्च, 1740 ई. के **गिरिया के युद्ध** में **अलीवर्दी खाँ** ने सरफराज खाँ को पराजित कर स्वयं को बंगाल का नवाब घोषित किया। अलीवर्दी खाँ ने मुगल बदाशाह को 2 करोड़ रुपए का नजराना देकर बंगाल के नवाब पद की वैधानिकता को प्राप्त किया। इसके काल में मराठों ने बंगाल अभियान किया, विवश होकर 1751 ई. में अलीवर्दी खाँ ने रघुजी भोसले से संधि कर ली। संधि के तहत् मराठों को 12 लाख रुपए वार्षिक चौथ व उड़ीसा का प्रान्त प्राप्त हुआ।

अलीवर्दी खाँ साहसी और कूटनीतिज्ञ था। अपने समय में उसने यूरोपियन जातियों को न तो अपने सूबे में संघर्ष करने दिया और न ही सूबे की राजनीति में उन्हें हस्तक्षेप करने का अवसर दिया। इसने अंग्रेजों को किलेबंदी करने की अनुमति प्रदान नहीं की। अलीवर्दी खाँ यूरोपियों को मधुमक्खियों के समान मानता था। उसका कहना था कि "यदि यूरोपियन को न छेड़ा जाए तो वह शहद देंगी और यदि छेड़ा जाए तो काट-काट कर मार डालेंगी।"

अलीवर्दी खाँ की मृत्यु के पश्चात् उसका दोहित्र (नाती) **सिराजुद्दौला** बंगाल का नवाब बना। सिराजुद्दौला के विरुद्ध पूर्णियां का नवाब शौकतजंग (जो सिराज की पूर्णियां मौसी का लड़का था) ने अपनी नवाबी का दावा किया। उसका समर्थन घसीटी बेगम (सिराज की दूसरी मौसी, जो ढाका के गवर्नर की विधवा थी) कर रहे थे। अंग्रेजों ने इस स्थिति का लाभ उठाना चाहा। सिराज ने बड़ी कुशलता से उनका सामना किया और **अक्टूबर, 1756 ई.** में **मनिहारी के युद्ध** में शौकतजंग को पराजित किया।

❐ प्लासी का युद्ध (23 जून, 1757 ई.)

बंगाल में राजनीतिक प्रभुत्व के लिए कम्पनी द्वारा नवाब के शासन में हस्तक्षेप किया गया। कम्पनी द्वारा नवाब के प्रतिद्वन्दियों घसीटी बेगम एवं शौकत जंग को शरण दी गई तथा नवाब के विरुद्ध षड्यंत्रों में सहयोग प्रदान किया गया। सिराजुद्दौला के नवाब बनने पर कम्पनी द्वारा उपहार आदि भेंट न कर दरबारी शिष्टाचार का पालन नहीं किया गया।

1717 ई. में मुगल सम्राट फरुखसियर द्वारा प्रदत्त दस्तकों का अंग्रेजों द्वारा दुरूपयोग किया गया। अंग्रेजों ने कासिम बाजार की फैक्ट्री पर हथियार जमा किए और नवाब को फैक्ट्री के भ्रमण की अनुमति प्रदान नहीं की। फ्रांसीसीयों ने बंगाल में चन्द्रनगर तथा अंग्रेजों ने फोर्टविलियम की किलेबंदी की। नवाब ने दोनों पक्षों को किलेबंदी रोकने के आदेश दिए, फ्रांसीसीयों ने किलेबंदी रोक दी, परन्तु अंग्रेजों ने फोर्टविलिमय की किलेबंदी को जारी रखा।

20 जून, 1756 ई. को नवाब के सैनिकों द्वारा 146 अंग्रेज युद्धबंदियों को 18/14 फीट एक कमरे में बंद कर दिया गया, जिसमें से केवल 23 युद्धबंदी जीवित बचे। इस घटना का वर्णन हॉलबेल द्वारा किया गया। इसे **ब्लैकहोल की घटना** के नाम से जाना जाता है। अंग्रेजों ने इसे अपनी शक्ति एवं प्रतिष्ठा के विरुद्ध आक्रमण माना।

16 अगस्त, 1756 ई. को कलकत्ता के पतन का समाचार मद्रास पहुंचने पर वहां से क्लाइव तथा वाटसन के नेतृत्व में एक सेना बंगाल पहुंची। क्लाइव ने **माणिकचंद (नवाब द्वारा नियुक्त कलकत्ता का प्रभारी)** को घूस देकर 2 जनवरी, 1757 ई. को कलकत्तापर अधिकार कर लिया। **9 फरवरी, 1757 ई.** में नवाब ने क्लाइव से **अलीनगर की संधि** कर ली। इस संधि में नवाब द्वारा कम्पनी को मुआवजा देने तथा कम्पनी को अपने स्थलों को दुर्गीकृत करने व सिक्के ढालने की अनुमति भी प्रदान की गई।

युद्ध की संभावना को देखते हुए क्लाइव ने मई, 1757 ई. में विलियम वाट्सन एवं व्यापारी **अमीनचन्द्र** के माध्यम से नवाब के विरुद्ध षड्यंत्र करना शुरू कर दिया। नवाब के प्रमुख अधिकारी उससे असंतुष्ट थे। क्लाइव ने नवाब के प्रधान सेनापति **मीर जाफर**, **यार लतीफ**, **दीवान राय दुर्लभ** एवं व्यापारी **जगत सेठ** को युद्ध पूर्व षड्यंत्र कर अपनी ओर मिला लिया।

इस षड्यंत्र में योजना बनी कि क्लाइव प्लासी तक आएगा, वहां मीर जाफर नवाब को धोखा देगा। बदले में उसे नवाब बनाया जाएगा और वह इसके लिए कम्पनी को कृतार्थ करेगा। इसके पश्चात् नवाब पर फ्रांसीसीयों से मित्रता बढ़ाने तथा अलीनगर की संधि का पालन न करने का बहाना लेकर क्लाइव एक सेना लेकर प्लासी पहुंच गया।

23 जून, 1757 ई. को मुर्शिदाबाद के दक्षिण में 30 मील दूर **भगीरथी नदी** के किनारे स्थित **प्लासी** नामक स्थान पर लगभग 3500 की **ईस्ट इंडिया कम्पनी** की सेना एवं 50,000 से अधिक बंगाल के नवाब **सिराजुद्दौला** तथा उनके **फ्रांसीसी सहयोगियों** की सेना के मध्य हुआ था। प्रारंभ में नवाब की एक अग्रगामी टुकड़ी, जिसके नेता **मीरमदान** और **मोहनलाल** थे, ने अंग्रेजों से बाजी ले गए और इन्होंने क्लाइव को वृक्षों के पीछे शरण लेने के लिए बाध्य कर दिया, सहसा एक गोली से मीर मदान मारा गया। मीरजाफर ने नवाब को सेना का नेतृत्व छोड़ युद्ध स्थल से चले जाने के लिए कहा। सिराजुद्दौला मुर्शिदाबाद के नवाब की सेना से पराजित हुआ, जहां मीर जाफर के पुत्र मीरन ने नवाब की हत्या कर दी।

❖ अंग्रेजों के विजय के कारण

1) क्लाइव कूटनीतिज्ञ तथा दूरदर्शी था। उसने कूटनीति के माध्यम से मीरजाफर की राजनीतिक, जबकि राय दुलर्भ और जगत सेठ की आर्थिक महत्वाकांक्षा को जागृत कर इन्हें सिराजुद्दौला के विरुद्ध कर दिया।
2) नवाब के अधिकारियों ने विश्वासघाती किया, जिसके परिणामस्वरूप नवाब की पराजय हुई।
3) सिराजुद्दौला एक अयोग्य नवाब था। अपने विरुद्ध इतने बड़े षड्यंत्र को नहीं समझ पाया और युद्ध के दौरान रणभूमि छोड़कर चले जाने से सैनिकों के उत्साह में कमी आई।
4) अंग्रेज किसी सेनापति के लिए नहीं, बल्कि इंग्लैण्ड के हित के लिए लड़ते थे। इसी संदर्भ में **पी. स्पीयर** कहते हैं कि "एक भारतीय नेता की विजय उसकी अपनी विजय थी, जबकि एक अंग्रेज जनरल की विजय इंग्लैण्ड की विजय थी।"
5) ब्रिटिश सैन्य विज्ञान तथा सैन्य दृष्टिकोण से श्रेष्ठ थे, अंग्रेजों की तोपें और छोटे हथियार भारतीय हथियारों से अच्छे थे और ब्रिटिश अधिकारी रणनीति व सामरिक महत्व की जानकारी में निपुण व प्रशिक्षित थे।

❖ परिणाम एवं महत्व

श्री नवीनचंद्र सेन के अनुसार "प्लासी की लड़ाई के बाद भारत में अनंत अंधकारमयी रात्रि आरंभ हो गई।"

प्लासी के युद्ध का असीम ऐतिहासिक महत्व है। प्लासी के युद्ध के पश्चात् मीर जाफर को बंगाल का नवाब बनाया गया। मीर जाफर ने अंग्रेज सेना को 24 परगने की जमींदारी, 50 लाख रुपए नकद तथा क्लाइव को 2 लाख 34 हजार पाउण्ड का पुरस्कार दिया।

युद्ध से अंग्रेजों की प्रतिष्ठा बड़ी और एक बार में अंग्रेजों को भारतीय साम्राज्य के प्रमुख दावेदारों की कतार में ला खड़ा किया। बंगाल से प्राप्त भारी राजस्व के सहारे उन्होंने एक शक्तिशाली सेना खड़ी की और इसी से उन्होंने शेष भारत की विजय का खर्च उठाया। प्लासी के युद्ध से बंगाल तथा अन्ततः सम्पूर्ण भारत पर अंग्रेजों के अधिकार का मार्ग प्रशस्त किया।